The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज की हिंदी पदों में अभिव्यक्त परिवर्तनवादी विचार

प्रा.डॉ.संजय जाधव,
सहयोगी प्राध्यापक
हिंदी भाषा एवं साहित्य विभाग, श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी

प्रस्तावना -

संतों का कार्य वास्तव में मानव मुक्ति का कार्य था। संतों ने अपने समय के समाज को अंधविश्वास, अज्ञान तथा धार्मिक विसंगतियों की बेडियों से मुक्त करने की पुरजोर कोशिश की। जिस प्रदेश में संतों की सक्रियता रही वह प्रदेश अन्य प्रदेशों की तुलना में पुरोगामी तथा सामाजिक दृष्टि से अपेक्षाकृत आधुनिक दिखाई देता है। अन्य प्रदेशों की अपेक्षा महाराष्ट्र के संतों ने अपनी सीधी-सादी रहन-सहन से तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण लेकर यहाँ के लोगों को सहिष्णुता का पाठ पढाया। यही कारण है कि महाराष्ट्र की भूमि समता का संवर्धन करने वाली, स्वतंत्रता का संरक्षण करने वाली, बंधुता को मानव जीवन की सार्थकता समझने वाली तथा सामाजिक न्याय का पक्ष लेकर उसका सदैव आग्रह करने वाली पुरोगामी भूमि है। दूसरे शब्दों में महाराष्ट्र उदात्त मानवी मूल्यों को जीवन के समस्त आयामों के साथ प्रतिष्ठित करने वाली क्रांतिकारी प्रदेश के रूप में समूचे भारत में विख्यात है। भारतीय समाज में जितने भी मानवाधिकार से संबंधित आंदोलन हुए हैं उनमें महाराष्ट्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मानवी जीवन को और अधिक समृद्ध तथा संपन्न करने के प्रयासों में महाराष्ट्र के विचारकों ने अपनी जिम्मेदारी अत्यंत प्रामाणिक रूप से निभाई है। समूचे महाराष्ट्र में विचारकों, चिंतकों तथा समाज सुधारकों ने अपने उद्‌बोधन-प्रबोधन के कार्य द्‌वारा इस महान प्रदेश को समताभूमि के रूप में प्रतिष्ठित करने में अपना अतूल्य योगदान दिया है। महाराष्ट्र के विदर्भ प्रांत में भी अपनी एक विशिष्ट एवं समृद्ध लोकजागरण परंपरा रही है। विदर्भ की पहचान जिन महामानवों के कार्यों से होती हैं उनमें संत गाडगे महाराज तथा संत तुकडोजी महाराज सर्वश्रेष्ठ स्थान पर दिखाई देते हैं। विदेशी शासकों की राजनीतिक गुलामी के साथ साथ धर्म द्‌वारा थोपी गयी मानसिक गुलामी के विरूद्ध संघर्ष करने वाले महान संत तुकडोजी महाराज को 'राष्ट्रसंत' की उपाधि से गौरवान्वित किया जाता है। तुकडो जी महाराज को 'राष्ट्रसंत' इसलिए भी कहा जाता है कि उन्होंने अपने उद्‌बोधन-प्रबोधन की भाशा के रूप में राष्ट्रभाषा हिंदी को सर्वोच्च प्राथमिकता

दी थी। हिंदी भाषा का महत्व उन्हों ने समझ लिया था। यह भी उतना ही सच है कि तुकडोजी महाराज ने हिंदी भाषा का प्रयोग कर हिंदी की महान सेवा ही की है। हिंदी प्रचार में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत की वैविध्यपूर्ण सामाजिक स्थिति में हिंदी का प्रचार करना वास्तव में महान राष्ट्रकार्य था। समूचे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने वाली हिंदी भाषा में लिखे उनके पद वास्तव में हम में देशप्रेम तथा राष्ट्रीय चेतना भर देते हैं। तुकडो जी महाराज के हिंदी पदों में सामाजिक परिवर्तन के विचार अत्यंत प्रखर रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। तुकडोजी महाराज ने अपने प्रबोधन के द्वारा सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया । 'ग्रामगीता' में उनके समाज हितकारक विचार वास्तव में हमारी सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धरोहर है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के कालसापेक्ष्य समाज चिंतन का विवेचन प्रस्तुत शोध निबंध में किया गया है तथा उसकी प्रासंगिता को भी अधोरेखित करने का प्रयास किया गया है।

शोधालेख के उद्देष्य -

1. महाराष्ट्र की संत परम्परा का संक्षिप्त परिचय देना
2. संत तुकडोजी महाराज के प्रेरक व्यक्तित्व का परिचय देना
3. संत तुकडोजी महाराज की रचनाधर्मिता का अवलोकन करना
4. 'सामाजिक परिवर्तन' इस अवधारणा को स्पष्ट करना
5. संत तुकडोजी महाराज के हिंदी पदों में अभिव्यक्त सामाजिक विचारों का विवेचन करना
6. संत तुकडोजी महाराज के हिंदी पदों में अभिव्यक्त सामाजिक परिवर्तनवादी विचारों की विशेषताओं को स्पष्ट करना।

विषय विवेचन -

परम पूजनीय तुकडोजी महाराज का समग्र जीवन समाज के उत्कर्ष के लिए समर्पित था। वे अपने प्रभावी उद्बोधन-प्रबोधन के लिए विख्यात हैं। जन भाषा का प्रभावी उपयोग उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिए किया। मानवता के महान समर्थक संत तुकडोजी महाराज के विचार युगसापेक्ष्य हैं। मनुष्य स्वभावतः स्वतंत्र चेतना का जीव है। गुलामी अथवा बंधनोंको तोडकर मुक्त रहना

उसका स्वभाव है। परंतु जब कभी स्वार्थी इरादे मनुष्य को गुलाम बनाने का षडयंत्र रचते हैं, तब-तब इन्हें ध्वस्त करने के लिए युगपुरुष अपनी युगीन भूमिका बडी ईमानदारी से निभाने का युगांतकारी कार्य करता हैं। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज भी ऐसी ही युग पुरुश थे, जिन्होंने राष्ट्र की गुलामी और समाजिक गुलामी के विरूद्ध व्यापक आंदोलन का समर्थ नेतृत्व किया। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज की सामाजिक विचारधारा पुरोगामी थी। अर्थात समाज में जो वर्णव्यवस्था तथा उससे विनिर्मित जाति व्यवस्था प्रचलित है, उसका वे अपनी कथनी-करनी से विरोध करते हैं। मनुष्य वास्तव में जन्मतः स्वतंत्र है। मनुष्य को अपने जन्मजात अधिकारों के उपभोग लेने का अधिकार हैं। तुकडोजी महाराज मानते हैं कि समाज में सभी के साथ समतापूर्ण व्यवहार होना चाहिए। तथा सबके सामाजिक न्याय की रक्षा करना समाज के सशक्त लोगों का आद्य कर्तव्य होता है। यही सोच आदर्श मानव की सोच होती है तथा व्यक्ति की पहचान उसके द्वारा अनुसरित विचारधारा के द्वारा ही होती है।

सामाजिक विचारधारा से तात्पर्य -

सामाजिक विचारधारा यह वास्तव में एक ऐसी अवधारणा है जो केवल कथनी से स्पष्ट नहीं की जा सकती बल्कि वह आचरण के द्वारा स्पष्ट हो जाती है। व्यक्ति का आचरण उसकी विचारधारा को द्योतित करती है। सामाजिक विचारधारा को परिभाषित करते हुए आर.एन. मुखर्जी ने लिखा है, ''सामाजिक विचारधारा विचारों की वह संख्या है, जो कि मानवीय अन्तः सम्बन्धों और अन्तः क्रियाओं द्वारा उत्पन्न, अभिव्यक्त एवं सुस्थिर रहते हुए व्यक्ति के सामाजिक जीवन तथा समस्याओं से विशेष रूप से सम्बन्धित होती है।''1 मानव इतिहास पर डाले, तो यह पता चलता है कि मनुष्य जिस समाज में रहता है, उस सामाजिक व्यवस्था से कभी भी पूरी तरह से खूश नहीं रहता है। मनुष्य निरंतर बेहतर से बेहतर की तलाश में होता है। उसकी इसी प्रवृत्ति के कारण वह यह प्रयास करता रहा है, वह चाहता है कि अपनी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को सुधार कर नवीन एवं उच्चतर सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करें लेकिन इसके लिए उसे वर्तमान परिस्थितियों का चिंतन एवं मनन करना आवश्यक होता है। इसी चिंतन एवं मनन के कारण सामाजिक विचारधारा की आधारशिला मजबूत होती है।

सामाजिक विचारक सदैव इस बात को समाज के सामने लाते रहे हैं कि जिस समाज व्यवस्था में वे साँस ले रहे हैं उसे बदलने का समय आ गया है। जो कुछ समाज में सड गल रहा है उसे बदलने की नितांत आवश्यकता का प्रतिपादन विचारकों ने किया। साथ ही विचारक-चिंतकों का यह प्रयास रहता है कि जो

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

विचारधारा समाज के बहुजनों के लिए उपकारक है उसका ही संवहन-संवर्धन अनिवार्य है। परंतु समाज में सदा से यही होता रहा है कि अल्प जनों के सुख-सुविधा के लिए तथा उनका जीवन सुखदायक बनाने हेतु समूची व्यवस्था को मजबूर किया जाता है। यह मजबूरी और विवशता इतनी सूक्ष्म होती है कि उसे सामान्य व्यक्ति समझ ही नहीं पाता। तब सामान्य जनों को उनकी मजबूरी-विवशता का अहसास करा नेने का काम तुकडोजी महाराज जैसे चेतना संपन्न प्रज्ञा पुरुष करते हैं।

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का जीवन-परिचय -

महाराष्ट्र की महान संत परम्परा को आधुनिक कालखंड में न केवल जीवित रखने वाले बल्कि अपने कार्य कर्तृत्व से आगे बढाने वाले तुकडो जी महाराज एक क्रांतिकारी संत माने जाते हैं। अपनी दृढ इच्छा शक्ति तथा शांति और संयम से समाज को सुयोग्य दिशा निर्देषन करनेवाले तुकडोजी महाराज का जन्म यवली गाँव में 30 अप्रैल 1909 में हुआ। इनके पिता का नाम नामदेव उर्फ बंडोजी तथा माँ का नाम मंजुला था। इनके जो लडका हुआ उसका नाम माणिकचंद्र रखा गया, आगे चलकर यही माणिकचंद्र तुकडोजी महाराज के नाम से विख्यात हुए। इस संदर्भ में लिखते हैं, ''बंडोजी (नामदेव) व उसकी पत्नी मंजुला ने अपने पुत्र का नाम 'माणिकचंद्र' या माणिक देव रखा जो आगे चलकर तुकडोजी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुआ।''2 बाल्यावस्था से ही वे अध्यात्मिक गुणों के लिए प्रसिद्ध तुकडोजी महारज के नामकरण की कथा भी रोचक है। मता मंजुला ने अपने पुत्र माणिक को परिक्षेत्र में विख्यात संत समर्थ अडकोजी महाराज के आशीर्वाद हेतु चरणों पर रखा था। तब महाराज ने बालक के मुंह में भाकरी अर्थात ज्वार की रोटी का टुकड़ा दिया। बालक उस टुकड़े को मुँह में दबाकर बडे आनंद से चखने लगा तो समर्थ अड़कोजी महाराज बडे प्रसन्न हुए। और अनायास ही उनके मुंह से निकल गया,''तुकडा घेतला, तुकडा खाल्ला, आज पासून हा माझा तुकडा झाला।''3 इस प्रसंग के पश्चात बालक का मूल नाम मानो लुप्त हो गया और तुकडोजी नाम ही विश्व विख्यात हो गया।

तुकडोजी महाराज केवल अध्यात्मिक और भजनकीर्तन में लीन रहनेवाले महाराज नहीं थे। देश की पराधिनता का बोध उन्हें था। वह समय अंग्रेज शासन काल था। तुकडोजी महाराज ने ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध जन आंदोलन किये। सन् 1923 में जन-असहकार आंदोलन, 1930 में जंगल सत्याग्रह, सन् 1935 में सालवर्डी की पहाड़ियों पर महारुद्र यज्ञ के माध्यम से लोगों को अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा दी। इस आंदोलन में तीन लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। इससे उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

और वे पूरे मध्य प्रदेश में लोकप्रिय हो गए। सन् 1936 में महात्मा गांधी ने उन्हें वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में आदरपूर्वक बुलाया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उनके द्वारा रचित गीत गाये जाने लगे, '"उठो जवानों करके बताओ, कहने के दिन गये', 'झाड झड़ूले शस्त्र बनेंगे, भक्त बनेगी सेना, पत्थर सारे बम बनेंगे, नाव लगेगी किनारे', 'शेर हो तो चलो राह भी शेर की। कहते हो शेर तो रीत क्यों मेंड़की?' 'प्यारा हिंदुस्थान है गोपालो की शान है'' ऐसे भजन आपने खंजड़ी के माध्यम से गाकर देहातीयों को उठाया, उन्हें क्रियाशील बनाया।''4 संतों का काम केवल लोगों में अध्यात्मिक ज्ञान फैलाना नहीं बल्कि राश्ट्रीय चेतना को फैलाना भी होता है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने देश को अंग्रेजों की और समाज को अज्ञान-अंधविश्वास की बेडियों से मुक्त करने के लिए प्रभावशाली ढंग से कार्य किया।

तुकडोजी महाराज के समाज परिवर्तनवादी विचारों का विवेचन हम निम्न मुद्दों के आधार पर कर सकते हैं-

1. समता का प्रबल समर्थन -

तुकडोजी महाराज के सामाजिक विचारों पर महात्मा गौतम बुद्ध के मानवतावादी विचारों का भी प्रभाव दिखलाई देता है। महात्मा बुद्ध समता के प्रबल समर्थक थे। समाज में यदि समता नहीं होगी तो वह समाज किसी भी क्षण छिन्नभिन्न हो सकता है। विषमता से ग्रसित समाज में कोई भी व्यक्ति संतुष्ट नहीं हो सकता । संत तुकडो जी महाराज भारत के समाज की विषम स्थिति से पूरी तरह से परिचित थे। सामान्य व्यक्ति का जीवन सन्मार्ग ही अग्रेसर हो इसलिए वे सदैव चिंतित रहते। संत तुकडोजी महाराज का युग तथा परिवेश के संबंध का चिंतन अत्यंत मूलगामी था। आधुनिक युग को विज्ञान युग कहा जाता है।

'' सबके लिए खुला है मंदिर है ये हमारा ।

मतभेद को भुलाता है मंदिर है ये हमारा।।

मतभेद होने पर भी मनभेद हो न पाए ।

हर एकता का हामी, नामघर है ये हमारा ।।'' भजनावली, पृ.26

सामान्यतः संत शब्द सुनते ही हमारे सामने एक ऐसा व्यक्तित्व आता है जो गेरूए वस्त्र पहनाता हो, आत्मा-परमात्मा की बातें करता हो, जीवन के क्षणभंगुरता की बात करता हो तथा अपने मोक्ष के प्रति

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

चिंतित दिखता हो। परंतु संत तुकडोजी महाराज का व्यक्तित्व ऐसे संतों जैसा नहीं था। वे देश तथा समाज के समसामयिक ज्वलंत प्रष्नों के संबंध में अत्यंत सचेत दिखाई देते हैं। विज्ञान, अणुशक्ति, विश्वयुद्ध जैसे प्रश्नों के साथ-साथ सामाजिक विषमता, जातिवाद, धार्मिक कर्मकांड तथा धर्म के नाम पर चल रहे शोषण के प्रति भी वे अत्यंत सचेत दिखाई देते हैं।

2. वर्णव्यवस्था तथा जातिव्यवस्था का विरोध -

संत तुकडोजी महाराज ने अपने समस्त कार्य-कर्तृत्व समाज को विकृति मुक्त करने के लिए समर्पित किया था। भारतीय समाज की यह कटूतम सच्चाई है कि यहाॅं व्यक्ति को गुणों की अपेक्षा उसकी जाति से पहचाना जाता है। जातियों के कारण समाज में विशमता और असमानता है। तुकडोजी महाराज समता और बंधुता के प्रबल पक्षधर थे। समाज को एकसंघ एवं एकरूप बनाये रखने के लिए समाज में व्याप्त विकृतियों को जड से उखाड फेंकने की आवश्यकता यकता का उन्होंने समर्थन ही नहीं किया बल्कि उनका समग्र कार्य इससे ही जुडा हुआ था। उनकी ऐसी दृढ धारणा थी कि आपसी भेदभाव नष्ट कर देने पर तथा विभेद की प्रत्येक व्यवस्था को खत्म कर देने पर ही सभी मनुष्य सुखी हो सकते हैं -

" निर्भय हो इस देश की माता, मंगल कीर्ति कराने ।
सत्य-शील अरू निर्मल मनसे, वीरों को उपजाने ।।
सदगुणी हो इस देश की जनता, जीवन सुख सजवाने।
रंक-राव-पंडीत-भिकारी, सब को सुख दिलवाने।।
विजयी हो, विजयी हो, विजयी हो भारत देश हमारा ।।
स्पृष्यास्पृष्यता हते यह सारा, देष कलंक मिटाने। "5

जाति, धर्म, रंग, लिंग, आर्थिक तथा अन्य सभी प्राकर की विशमता को नश्ट करने का व्यापक जन अभियान चलाने के लिए संत तुकडोजी महाराज अपने समय के प्रभावी प्रबोधन साधन 'कीर्तन' का प्रयोग करते हैं। भारतीय समाज जीवन की प्रमुख विशेषता है विषमता। भारतीय समाज जीवन में

The South Asian Academic Research Chronicle
ISSN 2454 - 1109
A Peer Reviewed Refereed and Indexed International Inter-disciplinary Open Access Monthly e-Journal

विशमता के अनेकानेक विकृत रूप और चित्र दिखाई देते हैं। भारतीय समाज जीवन की विशमता यहां की धर्म व्यवस्था के साथ जुडी होने के कारण यह और भी विकृत तथा मजबूत है।

3. मानव के रूप् में समन्वय का आग्रह-

वास्तविक रूप में धर्म मनुष्य को मनुष्य के रूप में विकसित होने का अवसर तथा सुरक्षा प्रदान करता है। परंतु भारत में धर्म इससे ठीक विपरित भूमिका में सक्रिय दिखाई देता है। यहां धर्म मनुष्य से उससे समस्त मानवाधिकार छीन लेता है तथा उसे धर्म के आधार पर तिरस्कृत, अपमानित तथा नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य करता है। इस स्थिति में भारतीय वर्ण व्यवस्था में सबसे निम्न स्तर पर रहने के लिए मजबूर किए गये दलित-पीडितों का जीवन अत्यंत भयावह था। यही कारण था कि मुस्लिम शासकों के काल में धर्म परिवर्तन करने की एक लहर सी आ गयी। इसके पश्चात अंग्रेज षासन काल में ईसाई धर्मांतरण का दौर शुरू हुआ। इस स्थिति में हिंदू धर्म के किसी भी चिंतक को अथवा धर्म के ठेकेदार को स्वचिंतन करने की आवश्यकता महसून नहीं हुई। स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माता भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने भी हिंदू धर्म की विकृत विषमता के कारण विवश होकर हिंदू धर्म को त्यागने की घोषणा करनी पडी। जो हिंदू धर्म मनुष्य को जानवरों से भी तुच्छ समझकर उसके साथ अमानवीय व्यवहार करता है उससे छुटकारा पाने के लिए धर्मांतरण का पर्याय डॉ.आंबेडकर ने चुना। उनके इस निर्णय का परिणाम हिंदू धर्म के संचालकों पर नहीं हुआ परंतु राष्ट्रसंत तुकाडोजी महाराज इस स्थिति से अत्यंत व्याकूल हो गये थे। वे हिंदू धर्म में प्रचलित छुआछुत के विरोधी थे । समतामूल्य पर दृढ निष्ठा रखने वाले संत तुकडो जी महाराज ने इस स्थिति में स्वचिंतन करते हुए लिखा -

> " हिंदू धर्म के देवता, अब हिंदुओं से रूठ गये।
>
> कारण है इसका एक ही, श्रद्धारहित हिंदू भये।।
>
> कितने हि हिंदू धर्म के जन, धर्म को छोडे जा रहे ।
>
> हिंदू धरम के साधु तो, मठ में चकाचक खा रहे ।। "6

सामाजिक समता के प्रबल समर्थक राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने अपने विचारों का प्रचार-प्रसार करने हेतु तत्कालीन समाज में प्रचलित 'कीर्तन' माध्यम का अत्यंत सार्थक एवं प्रभावी उपयोग किया।

उनकी वाणी अत्यंत मीठी, सरल तथा सुबोध थी। श्रोता के हृदय को छुने का सामर्थ्य उसमें था। संत तुकडोजी महाराज ने अपना समस्त जीवन लोकचेतना को प्रबुद्ध करने हेतु व्यतीत किया। प्रतिभासंपन्न तुकडोजी महाराज की प्रत्येक रचना में रूढि-परंपराओं का विरोध, अंधविश्वास पर कठोर आघात, समाजसेवा-राश्ट्र सेवा का प्रचार तथा नैतिक षिक्षा का महत्व प्रतिपादित किया है। 'अनुभवसारग भजनावली', 'सेवाधर्म', 'राष्ट्रीय भजनावली' तथा 'ग्रामगीता' जैसे लगभग तीस रचनाओं का सृजन संत तुकडोजी महाराज ने किया।

4. शुद्ध आचरण का उपदेश -

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने अपने समग्र लेखन में नैतिकता और सदाचरण पर विषेश बल दिया है। वे मनुश्य को समझाने का प्रयास करते हैं कि अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का अहित करने से व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता । वे समझाते हैं कि झूठ और छल से इकट्ठा किया गया धन किसी काम का नहीं है तथा किसी को विकृत दृश्टि से देखना तथा कटू वचन बोलना स्वयं के लिए ही घातक सिद्ध हो सकता है। निंदा करना, चुगली करणा तथा चापलुसी करने को वे व्यक्ति का सबसे बडा दोश मानते थे। अपने उपदेषपरक 'बोधामृत' में वे लिखते हैं -

" झूठा कपट करके कहीं, धन को कमाना छोड दे।

टेढी नजर से देखना, बुरी जबानी तोड दे।।

निंदा किसी की ना करे, व्यभिचार मारग खोड दे।। "7

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि संत तुकडोजी महाराज व्यक्ति तथा समाज को स्वस्थ तथा निरोगी बनाने के लिए सदैव प्रयत्नशील थे।

संत तुकडोजी महाराज निरंतर समाज को विकसित करने के लिए प्रयत्नशील रहे। उनकी सामाजिक विचारधारा विकासोन्मुख रही है। वे अपने समय के सामाजिक व्यवस्था से संतुष्ट नहीं थे। वर्ण-जाति में विभाजित समाज को एकता के सूत्र में बाॅंधना चाहते थे। यह चिंतनशील व्यक्ति की स्वाभाविक मनिषा होती है। जैसे कि कहा गया है, "सामाजिक विचारधारा मानव की विकासवादी प्रवृत्ति की परिचायक है। किसी भी युग में व्यक्ति अपनी तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था से पूर्णतया संतुष्ट नहीं

रहा। इसका मुख्य कारण है; कि व्यक्ति की विकासवादी प्रवृत्ति है और इसी प्रवृत्ति से प्रेरित होकर व्यक्ति सदैव यही प्रयत्न करता रहा है, कि वह किसी प्रकार अपनी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को सुधार कर नवीन और उच्चतर सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करें।''8 यही वैचारिक तथ्य संत तुकडोजी महाराज के व्यक्तित्व में दिखाई देता है। वे बेहतर से बेहतर समाज की कामना में लगे हुए थे। भारतीय समाज को निरंतर विचारोन्मुख तथा दोषमुक्त बनाने हेतु वे सक्रिय रहे।

निष्कर्ष -

1. महाराष्ट्र की संत परंपरा अत्यंत समृद्ध होने के साथ साथ समतामूल्य के लिए आग्रही रही है।
2. राश्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का समग्र व्यक्तित्व अत्यंत प्रेरक एवं प्रभावी था।
3. भारतीय समाज जीवन में व्याप्त विकृतियों को तथा विसंगतियों को नष्ट करना ही राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के समग्र जीवन कार्य का उद्देश्य था।
4. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने समाज को एकसूत्र में जोडने के लिए विशेष प्रयास किया।
5. तुकडोजी महाराज के हिंदी पदों में उनका राष्ट्रप्रेम का भाव मुखर होता है।
6. संत तुकडोजी महाराज का समाज चिंतन मनुष्य केंद्रीत है।
7. सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य से संत तुकडोजी महाराज निरंतर कीर्तन-लेखन के माध्यम से सक्रिय रहे।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि राश्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का समस्त कार्य एवं लेखन समाजिक समन्वय के व्यापक हेतु से चलाया गया अभियान रहा है। समतावादी-परिवर्तनवादी विचार परंपरा के अत्यंत सक्रिय चिंतक के रूप में वे युग के फलक पर विराजित हुए थे। तत्कालीन समाज जीवन में जितनी भी विसंगतियाॅं, विकृतियां तथा समस्याएं थी, उनपर राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने तीक्ष्ण कटाक्ष डाला है। शिक्षा का महत्व, स्वच्छता का महत्व तथा सामाजिक समता का महत्व सामान्य जन को समझाने के लिए अपना समस्त जीवन व्यतीत करने वाले तुकडोजी महाराज लोकजारण के अग्रदूत के रूप में समस्त भारतीयों के मन-मस्तिष्क में जीवित हैं। विदेशियों की गुलामी से राष्ट्र मुक्ति तथा धार्मिक संकीर्णताओं से सामान्य मानव की मुक्ति के लिए लडाई लडनेवाले संत तुकडोजी महाराज वास्तव में क्रियाशील राष्ट्रसंत थे। अपने वाणी और लेखनी के द्वारा उन्होंने समाज मन को कलुषित करने वाले विशैले तत्वों को दूर करने का प्रयास किया। 'ग्रामगीता' में अभिव्यक्त उनके

विचार वर्तमान युग में अत्यंत अनिवार्य हैं। समाज जिन विकृतियों से घीरा हुआ दिखाई दे रहा है उससे मुक्त होने के लिए राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। सामाजिक परिवर्तन के उद्देष्य से लिखे गये उनके हिंदी पद साहित्य तथा समाज की अमूल्य धरोहर है।

संदर्भ संकेत -

1. मुकर्जी रवीन्द्र नाथ, सामाजिक विचारधारा, पृष्ठ 32
2. तुकडोजी महाराज-मार्च 2013, पृष्ठ 11
3. सहस्त्रबुद्धे, प्र.ग., राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज, पृष्ठ 19
4. महाराज, राष्ट्रसंत तुकडोजी, भारत साधु समाज की सेवा साधना, नवम्बर 2001, पृष्ठ 05
5. संत तुकडोजी महाराज, संत तुकडोजी महाराजांची भजने व श्लोक , पृष्ठ 55
6. महाराज, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, ग्रामगीता बोधमृत, पृष्ठ 22
7. महाराज, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, ग्रामगीता बोधमृत, पृष्ठ 22
8. डॉ. पाण्डेय, गणेश एवं पाण्डेय, अरुणा, सामाजिक विचारधारा एवं सामाजिक विचारक पृष्ठ 33